शिवेश प्रताप

लोक नीति विश्लेषक

आजकल

बदलाव की मांग करती स्टार्टअप संस्कृति

हमारे देश में स्टार्टअप का दायरा बीते एक दशक में तेजी से बढ़ा है। परंतु केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने हाल ही में इस संदर्भ में कहा कि हमें केवल संख्या नहीं, बल्कि नवाचार और वैल्यू-आधारित स्टार्टअप्स को बढ़ावा देना चाहिए। जबकि इससे इतर, चीन ने अपने अलग राजनीतिक और आर्थिक संदर्भ में रणनीतिक रूप से हाई-वैल्यू स्टार्टअप इकोसिस्टम को विकसित किया है, जो प्रौद्योगिकी और वैश्विक नेतृत्व को प्राथमिकता देता है। ऐसे में भारत और चीन की स्टार्टअप इकोसिस्टम से संबंधित दशाओं का तुलनात्मक अध्ययन भी आवश्यक है

प्रतीकात्मक

भारत का स्टार्टअप इकोसिस्टम पिछले एक दशक में बहुत तेजी से आगे बढ़ा है। वर्ष 2024 तक 1.17 लाख से अधिक मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स के साथ हमारा देश विश्व का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप हब बन चुका है। हालांकि, इस विकास की चमक के पीछे एक महत्वपूर्ण सवाल छिपा है : क्या हम वास्तव में मूल्य आधारित स्टार्टअप्स बना रहे हैं या केवल संख्या बढ़ा रहे हैं? केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने हाल ही में इस संबंध में चिंता भी व्यक्त की है। वहीं, चीन ने अपने अलग राजनीतिक और आर्थिक संदर्भ में रणनीतिक रूप से एक उच्च-मूल्य स्टार्टअप इकोसिस्टम को विकसित किया है, जो पैमाने, प्रौद्योगिकी और वैश्विक नेतृत्व को प्राथमिकता देता है।

ऐसे में हमें यह समझने का प्रयास करना होगा कि कैसे चीन ने उच्च-मूल्य वाली स्टार्टअप क्रांति को जन्म दिया और इसकी तुलना में भारत के वर्तमान सेवा-आधारित स्टार्टअप माडल अपेक्षाकृत निम्न-मूल्य के हैं। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल की बात भारत की स्टार्टअप दृष्टि को नवाचार, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और गहरी तकनीक आधारित मूल्य सृजन की ओर पुनः केंद्रित करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

चीन का हाई-वैल्यू स्टार्टअप माडल : चीन का स्टार्टअप परिदृश्य इस सदी के दूसरे दशक की शुरुआत में तब तेजी से बढ़ा, जब सरकार ने अपनी ''मास एंटरप्रेन्योरशिप और इनोवेशन'' योजना शुरू की। लेकिन चीन को विशेष रूप से अलग बनाता है उसकी स्पष्ट रणनीतिक प्राथमिकता। वर्ष 2017 में चीन ने अपनी नेक्स्ट जेनरेशन एआइ योजना जारी की, जिसका उद्देश्य 2030 तक एआइ में वैश्विक नेतृत्वकर्ता बनना था। वर्ष 2024 के अंत तक चीन में 1,600 से अधिक एआइ कंपनियां हैं, जो केवल अमेरिका से पीछे हैं। सेंसटाइम, मेगवी और होराइजन रोबोटिक्स जैसी कंपनियां केवल यूनिकार्न नहीं हैं, वे चेहरे की पहचान, नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग और चिप डिजाइन के क्षेत्र में नए वैश्विक मानदंड स्थापित कर रही हैं। 'मेड इन चाइना 2025' लांच के साथ वहां की सरकार ने सेमीकंडक्टर अनुसंधान और विकास के लिए 150 अरब डालर से अधिक आवंटित किए। कई स्टार्टअप्स अमेरिकी प्रतिबंधों के बीच घरेलू चिप उत्पादन को बढ़ावा दे रहे हैं। दरअसल चीन विश्व का सबसे बड़ा औद्योगिक रोबोट बाजार है। शेनझेन और शंघाई में स्टार्टअप हब उन्नत रोबोटिक्स और क्वांटम कम्युनिकेशन पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, जिन क्षेत्रों में भारत की सीमित उपस्थिति है। चीन केवल स्टार्टअप्स को प्रेरित नहीं करता, यह उन्हें रणनीतिक रूप से निधि भी उपलब्ध करवाता है और उनका पैमाना बढ़ाता है।

गुणवत्ता कम मात्रा अधिक : भारत के स्टार्टअप बूम का एक पक्ष यह भी है कि गुणवत्ता के बजाय मात्रा पर अधिक जोर है। भारत 110 से अधिक यूनिकार्न हैं, लेकिन इनमें से अधिकांश ई-कामर्स, फिनटेक, एडटेक और फूड डिलीवरी जैसे क्षेत्रों में हैं। हालांकि ये क्षेत्र महत्वपूर्ण हैं, लेकिन कम तकनीकी प्रयोग, दोहराव तथा फीडबैक आधारित हैं, साथ ही इनमें उत्कृष्ट नवाचारों की भी कमी है। भारत के 60 प्रतिशत यूनिकार्न सेवा-आधारित और उपभोक्ता-केंद्रित हैं। 10 प्रतिशत से भी कम यूनिकार्न कोर तकनीकी क्षेत्रों जैसे एआइ, बायोटेक, सेमीकंडक्टर्स या रोबोटिक्स में कार्यरत हैं। भारत का अनुसंधान और विकास खर्च जीडीपी का केवल 0.65 प्रतिशत है, जबकि चीन का यह आंकड़ा 2.4 प्रतिशत है।

भारतीय स्टार्टअप्स हाई वैल्यू प्रोडक्ट के बजाय उपभोक्ता फीडबैक पर निर्भर हैं। स्टार्टअप्स यूजर अधिग्रहण पर लाखों रुपये खर्च करते हैं, लेकिन उनके पास स्थिर माडल नहीं होते। फंडिंग चक्र त्वरित निकासी पर प्राथमिकता देते हैं, न कि दीर्घकालिक शोध पर। पिच डेक यानी बिना किसी खास नवाचार के निवेशकों को आकर्षित करने पर अधिक जोर दिया जाता है, न कि पेटेंट पर। यहां तक कि डीपीआइआइटी-रजिस्टर्ड स्टार्टअप्स में से एक हिस्सा ''कापीकैट'' माडल है, जिनके पास बौद्धिक संपदा या गहरी उत्पाद इंजीनियरिंग की कमी होती है।

वेंचर कैपिटल संस्कृति का अभाव : भारतीय वेंचर कैपिटल अक्सर सिलिकान वैली की उपभोक्तावादी मानसिकता की नकल करता है, जिसमें दीर्घकालिक मूल्य सृजन के बजाय त्वरित पैमाना और बाजार में कब्जा करना प्राथमिकता होती है। परिणामस्वरूप, सेवा-आधारित कम नवाचार वाले वेंचर्स में अधिक निवेश किए जाने बावजूद अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हुए हैं। वहीं, 'बाय-नाउ-पे-लेटर' फिनटेक माडल के तहत ग्रामीण भारत में निवेश कम है।

इसके विपरीत, चीन का वेंचर कैपिटल इकोसिस्टम, जो अक्सर सरकारी नीति द्वारा समर्थित या मार्गदर्शित होता है, अपने संसाधनों को दीर्घकालिक, उच्च जोखिम वाले अनुसंधान और विकास परियोजनाओं में लगाता है। ये स्टार्टअप्स, जो अक्सर सेमीकंडक्टर्स, क्वांटम कंप्यूटिंग, एआइ और स्वच्छ ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में होते हैं, सात से दस साल तक परिपक्व होने में समय ले सकते हैं, लेकिन इन्हें वैश्विक प्रौद्योगिकी नेतृत्व और राष्ट्रीय रणनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए डिजाइन किया जाता है।

चीन से सीखने योग्य बातें : अपने स्टार्टअप इकोसिस्टम की असली क्षमता को अनलाक करने के लिए भारत को उद्यमिता वृद्धि को अपनी राष्ट्रीय रणनीतिक प्राथमिकताओं के साथ जोड़ना पड़ेगा। स्टार्टअप्स को पृथक आर्थिक कारकों के रूप में मानने के बजाय उन्हें मिशन-प्रेरित पहलों में एकीकृत किय जाना चाहिए। उदाहरण के लिए 10 अरब डालर की सेमीकंडक्टर मिशन को चिप डिजाइन और निर्माण में स्टार्टअप-प्रेरित नवाचार को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना चाहिए, जिससे एक भू-राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र में स्वदेशी क्षमताओं का निर्माण हो सके। इसके अतिरिक्त, चीन के राज्य-समर्थित ''बिग फंड'' के माडल पर आधारित एक समर्पित भारत इनोवेशन फंड की स्थापना उच्च जोखिम वाले, उच्च पुरस्कार वाले उपक्रमों के लिए दीर्घकालिक पूंजी समर्थन प्रदान कर सकती है। यह रणनीतिक जुड़ाव न केवल भारत की आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देगा, बल्कि इसे अत्याधुनिक नवाचार में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करेगा।

कहा जा सकता है कि पीयूष गोयल ने भारत में स्थापित हो रही स्टार्टअप संस्कृति की कमजोर परिभाषा पर बहुत ही सार्थक चिंता व्यक्त की है। भारत को स्टार्टअप्स का एक श्रेणीबद्ध वर्गीकरण पेश करना चाहिए, जो नवाचार की प्रकृति और गहराई पर आधारित हो। इसमें वे स्टार्टअप्स शामिल हों जो कोर प्रौद्योगिकियों जैसे एआइ, सेमीकंडक्टर्स और बायोटेक आदि पर काम कर रहे हैं, एसएमई नेतृत्व वाले प्रोसेस इनोवेटर्स जो परिचालन दक्षता और क्रमिक सुधारों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं और उपभोक्ता प्लेटफार्म जो सेवा-आधारित समाधान के माध्यम से बाजार की आवश्यकताओं को संबोधित कर रहे हैं। प्रत्येक श्रेणी को अलग-अलग नीति समर्थन, फंडिंग तंत्र और मूल्यांकन प्राप्त करना चाहिए, ताकि उच्च प्रभाव वाले नवाचारकर्ताओं को भीड़ में खोने से बचाया जा सके और उन्हें वह पोषण मिल सके जो उन्हें पैमाना बढ़ाने और नेतृत्व करने के लिए सचमुच आवश्यक है।

उद्यमिता में नवाचार पर देना होगा ध्यान

भारत को एक वैश्विक नवाचार शक्ति में बदलने के लिए मूल्यांकन-प्रेरित 'यूनिकार्न्स' की नकल करने से इतर डीप-टेक उद्यमों के मजबूत आधार निर्माण की ओर स्थानांतरित करना होगा। एक दूरदर्शी रोडमैप के जरिये वर्ष 2030 तक कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, बायोटेक्नोलाजी, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और जलवायु नवाचार जैसे रणनीतिक क्षेत्रों में एक हजार डीप-टेक स्टार्टअप्स का निर्माण शामिल होना चाहिए। इन उपक्रमों का समर्थन जिला स्तर के नवाचार प्रयोगशालाओं द्वारा किया जाना चाहिए, जो प्रमुख अनुसंधान और विकास संस्थानों जैसे सीएसआइआर, इसरो, डीआरडीओ और आइसीएआर से जुड़े हों, जिससे टीयर-टू और टीयर-थ्री शहरों में स्थित जमीनी स्तर पर काम करने वाले उद्यमियों को विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचा और मार्गदर्शन मिल सके। इसके अलावा, भारत को बौद्धिक संपत्ति सृजन को केवल फंडिंग जुटाने की कहानी के बजाय धरातल पर प्रोत्साहित करना चाहिए और ऐसे स्टार्टअप्स को जो पेटेंट पर ध्यान केंद्रित करते हैं, उन्हें टैक्स क्रेडिट, तेजी से सार्वजनिक फंडिंग प्राप्त करने से संबंधित एवं वैश्विक आईपी प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए। इस इकोसिस्टम को सुदृढ़ करने के लिए भारत को चीन के स्टार मार्केट के समान एक समर्पित स्टाक एक्सचेंज स्थापित करना चाहिए। यह अनुसंधान एवं विकास-आधारित स्टार्टअप्स के लिए एक मंच प्रदान करेगा, जो पूंजी और दीर्घकालिक निवेशकों के लिए उपयुक्त होगा। इससे स्टार्टअप में नया बदलाव आएगा।

वस्तुतः आज भारत की स्टार्टअप क्रांति एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी है। इसका आधार मजबूत होने के साथ ही इकोसिस्टम भी जीवंत है, लेकिन यदि रणनीतिक दिशा, नीति-प्रेरित नवाचार और वैल्यू पर ध्यान केंद्रित नहीं किया गया, तो भारत केवल एप आधारित स्टार्टअप देश बनकर रह जाएगा, जबकि हमें चौथी औद्योगिक क्रांति के नेतृत्व हेतु एलगोरिदम आधारित स्टार्टअप तंत्र खड़ा करना पड़ेगा।

हम जानते हैं कि एल्गोरिदम आधारित होना मूल रूप से अधिक बेहतर है, जो निरंतर नवाचार को अंजाम दे सकता है। जैसा कि पीयूष गोयल ने कहा, 'हम उन स्टार्टअप्स को तलाश नहीं कर रहे हैं जो केवल आसान पैसे के लिए हैं, हम ऐसे स्टार्टअप्स चाहते हैं जो भारत का भविष्य बनाएं।' लिहाजा अब समय आ गया है कि भारत जुगाड़ से असली नवाचार की ओर मुड़े, यूनिकार्न के उन्माद से डीप-टेक राष्ट्र निर्माण की ओर आगे बढ़े, ताकि देश सतत विकास की दिशा में प्रगति पथ पर तेजी से अग्रसर हो सके।

(शिवेश प्रताप)